

राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

संस्कृत-रूपान्तरण-कर्ता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपतिसम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्ता
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरीजी महाराज
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) प्रदूषितां स्वयमुनां तु, दर्श दर्श तद् - हृदयं विदीर्यते ।
कन्यासु दुष्कर्मणा, चापीह वस्तुं मनो नानुमन्यते ॥36॥

प्रदूषित की गई अपनी यमुना को तो देख देख कर उन श्रीकृष्ण का हृदय ही विदीर्ण हो जाए और कन्याओं पर किए जा रहे दुष्कर्म से भी उनको उनका मन यहाँ रहने के लिए अनुमति नहीं दे ।

Krishna's heart will crumble seeing the state of his polluted Yamuna, and his heart would not allow him to live here where so many bad deeds happen to the girls.

वसतौ वसतौ मदिरा, विक्रीयते जन-धन-स्वास्थ्यनाशिका ।

व्यवसायोऽस्याः सम्प्रति, राज्यकोष - संवर्धन - करं मन्यते ॥37॥

बस्ती बस्ती में लोगों के धन और स्वास्थ्य को नष्ट करने वाली मदिरा बेची जा रही है इस मदिरा का व्यवसाय अब राज्य के कोष को बढ़ाने वाला माना जाता है ।

In each and every colony, the destroyer of money and health, liquor is being sold, but the liquor business is considered good for filling the country's treasury. [37] (is it better to say just - In each colony...)

गृहे गृहे मदिरेयं, प्रविश्य तत्सुख-शान्तिमपहृतवती हा ! ।

पुनरपि नहि प्रशासनं, नियन्त्रणमत्र कुरुते स्वं किञ्चन हा ! ॥38॥

घर घर में प्रवेश करके इस मदिरा ने उसकी सुख शान्ति छीन ली है, हा ! दुःख है । फिर भी प्रशासन इस पर अपना कुछ नियन्त्रण नहीं कर रहा है, हा ! दुःख है ।

Yes, it is sad that the liquor entered homes and took away peace and happiness and administration is still not doing anything to control/curb it.

विदेश - शासनेऽपि ये, न श्रुता दृष्टा अपराधाः कुत्रापि ।

स्व-शासनेऽद्य तान् वीक्ष्य, सलज्जं दोदूयते चित्तमविरतम् ॥39॥

विदेशी शासन में भी जो अपराध कहीं भी सुने देखे नहीं गए थे, आज उनको अपने शासन में देख कर मारे शर्म के दिल निरन्तर दुखता रहता है ।

Whatever crimes we heard and seen about in foreign countries, today seeing all this in our country heart is continuously painning out of shame.

राष्ट्रपिता गान्धी प्राग् यादृशं स्वराज्यमभिकामयते स्म ।

तदांशिकपूर्तिरपि किं, कुत्रचन दृष्टिमुपैत्यधुना ? ॥40॥

राष्ट्रपिता गांधी जी ने जिस प्रकार के स्वराज की कामना पहले की थी, क्या उसकी आंशिक पूर्ति भी कहीं इस समय देखने में आती है ?

Can anywhere be seen today, even partially, the self-governance envisioned by Gandhi, the Father of the Nation?

स्वराज्यं यथा भवतात्, सुराज्यं किं तत्स्वप्नोऽभूत् सत्योऽत्र ।

स्वराज्यं सु+ऽराज्यमिति, रूपे निगदितुं प्रवृत्ता जना न किम् ? ॥41॥

स्वराज जिस प्रकार सुराज्य बने, क्या उन राष्ट्रपिता गांधी जी का यह स्वप्न सत्य हुआ ? स्वराज्य के लोग क्या सु+अराज्य इस रूप में करने को प्रवृत्त नहीं हो गए हैं ?

Did the nation's father Gandhi's dream of the self-governance became true, or did it instead of good-governance become good-non-governance?

कथनाय तु जनतन्त्रे, वयं निवसामः स्वतन्त्राः साम्प्रतं हि ।

परन्तु नैतत् सत्यं, वयं निवसामः स्वकीय - बाबुतन्त्रे ॥42॥

कहने के लिए तो विदेशी शासन से स्वतन्त्र हुए हम निश्चित रूप से जनतन्त्र में निवास करते हैं, परन्तु यह सत्य नहीं है । हम तो अपने बाबुतन्त्र में निवास करते हैं ।

We say that we are free from foreign rule and that we surely live in a democracy, but this is not true. We are living in bureaucracy.

(क्रमशः)